VadtalDham Dwishatabdi Mahotsav

The Vadtal Temple serves as the spiritual capital of the Shree Swaminarayan Sampradaya, which has spread across the world today. This temple was built on the command of Bhagwan Shree Swaminarayan by Sadguru Shree Brahmanand Swami and Sadguru Shree Aksharanand Swami. Sadguru Brahmanand Swami used nine lakh bricks in the foundation of this temple. The temple is built in a lotus shape, symbolizing the spirit of harmony among all religions. It includes depictions of past avatars of gods and goddesses. Vadtal Temple is located in Nadiad Taluka of Kheda district.

Many great deeds were performed by Bhagwan Shree Swaminarayan at Vadtal:

- The Pran Pratishtha of Shree Harikrushna Maharaj. (He said that HARI KRUSHNA MAHARAJ is none other than himself.)
- The Shikshapatri – Shreeji Maharaj wrote the Shikshapatri during his stay in Vadtal. This scripture contains 212 shlokas.

The capital of the Shree Swaminarayan sect, Vadtal, is a center of attraction for all and is a place where many attain salvation. In this temple, five aartis are performed daily and the idols are worshipped piously. As a result, the deities in the temple fulfill the wishes of millions of devotees.

Special Features of VadtalDham

- VadtalDham is said to be Akshardham on Earth.
- VadtalDham is sanctified by the holy footsteps of the manifested Lord.
- VadtalDham is the eternal abode of Shree Harikrushna Maharaj.
- VadtalDham is the main center of obedience and worship.
- VadtalDham is the place where Mother Mahalakshmi performed penance.
- VadtalDham is where Dwarikadhish came and stayed forever.
- VadtalDham is the site where the two Acharya Maharajs were anointed for the first time.
- VadtalDham is where spiritual aspirants take saint-initiation.
- VadtalDham is where Swaminarayan Bhagwan's prasadi items are stored.
- Sadguru Shri Gopalanand Swami lived here for 22 years.

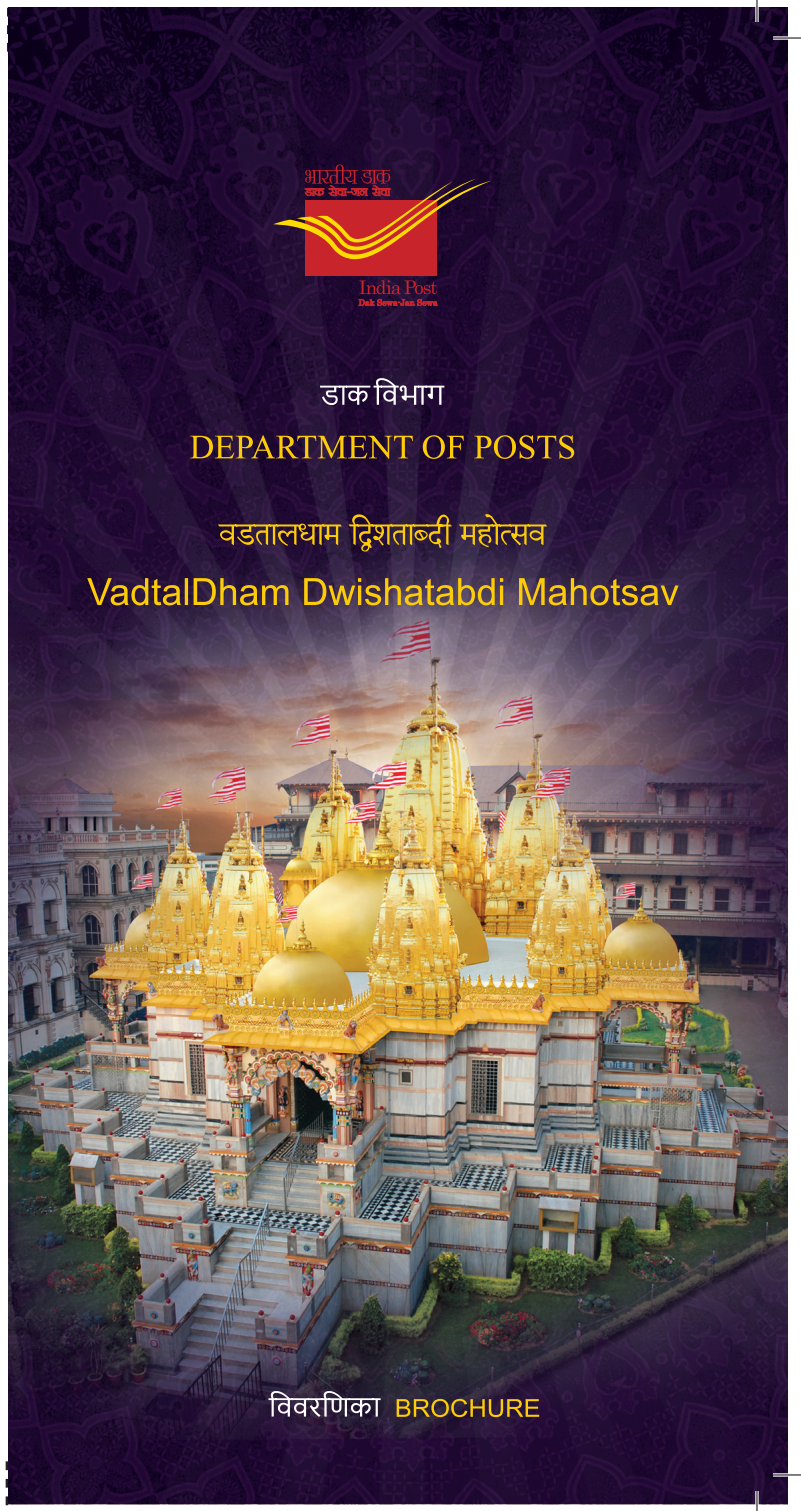
In short, Vadtal is the greatest place of pilgrimage for the Sampradaya. We are especially joyous as we approach the completion of 200 years since the establishment of the upasya Swarup Shree Harikrushna Maharaj and Shree Lakshminarayan Dev, an event performed by Bhagwan Shree Hari himself.

To commemorate the 200th anniversary of Vadtal Temple, a special stamp will be released to honor its pivotal role in the Shree Swaminarayan Sampradaya. This initiative celebrates the temple's enduring commitment to spiritual growth, community service, and the promotion of harmony among all faiths. The stamp symbolizes Vadtal's rich heritage and its significant impact on the lives of countless devotees, providing a sanctuary for worship and a source of inspiration.

The Department of Posts is proud to release this commemorative postage stamp on VadtalDham Dwishatabdi Mahotsav and pay tribute to the temple's enduring commitment for promoting the spirit of harmony among all religions.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Jairaj T.G.
Text	:	Referenced from content provided by Proponent



वडतालधाम द्विशताब्दी महोत्सव

वडताल मंदिर, विश्वभर में फैले श्री स्वामीनारायण संप्रदाय का आध्यात्मिक केन्द्र है। इसका निर्माण, भगवान श्री स्वामीनारायण के आदेश पर सद्गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी और सद्गुरु श्री अक्षरानंद स्वामी की देख–रेख में किया गया। सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी ने इस मंदिर की नींव में नौ लाख ईंटों का प्रयोग किया। कमल के फूल के आकार में निर्मित यह मंदिर सभी धर्मों के बीच सौहार्द की भावना का प्रतीक है। मंदिर में देवी–देवताओं के पूर्व अवतारों को चित्रित किया गया है। वडताल मंदिर, खेड़ा जिले के नाडियाद तालुका में स्थित है।

भगवान श्री स्वामीनारायण द्वारा वडताल में अनेक महान कार्य किए गए, जैसे

- श्री हरिकृष्ण महाराज की प्राण प्रतिष्ठा (उन्होंने कहा कि हरिकृष्ण महाराज उन्हीं के ही रूप हैं)।
- शिक्षापत्री श्रीजी महाराज ने वडताल में अपने प्रवास के दौरान शिक्षापत्री की रचना की। इस धर्मग्रंथ में 212 श्लोक हैं।

श्री स्वामीनारायण संप्रदाय का केंद्र बिंदु वडताल मंदिर सभी के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह एक ऐसा स्थल है, जहां बहुत से लोगों को मोक्ष प्राप्त हुआ है। इस मंदिर में प्रतिदिन पांच बार आरती की जाती है। साथ ही, प्रतिमाओं की पूरे धार्मिक अनुष्ठान के साथ पूजा–अर्चना भी की जाती है। मान्यता है कि मंदिर में विराजमान देव लाखों भक्तों और श्रद्धालुओं की कामनाओं को पूरा करते हैं।

वडतालधाम की विशिष्ट विशेषताएं

- कहा जाता है कि वडताल धाम, पृथ्वी का अक्षरधाम है।
- इस पवित्र स्थल पर भगवान के चरण पड़े थे।
- वडतालधाम, श्री हरिकृष्ण महाराज का शाश्वत निवास है।
- वडतालधाम आस्था और अराधना का प्रमुख केंद्र है।
- वडतालधाम वही स्थल है, जहां माता महालक्ष्मी ने तपस्या की थी।
- इसी स्थान पर द्वारिकाधीश पधारे थे और सदैव के लिए यहीं विराजमान हो गए।
- वडतालधाम वह स्थल है जहां पहली बार दो आचार्य महाराजाओं का अभिषेक किया गया।
- वडतालधाम ऐसा स्थल है जहां आध्यात्मिक साधक, संत बनने की दीक्षा प्राप्त करते हैं।
- वडतालधाम वह स्थल है जहां स्वामी नारायण भगवान की प्रसादी वस्तुएं संग्रहित है।
- सद्गुरु श्री गोपालनंद स्वामी 22 वर्षों तक यहां रहे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि वडताल, श्री स्वामीनारायण संप्रदाय का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि उपास्यस्वरूप श्री हरिकृष्ण महाराज और श्री लक्ष्मीनारायण देव की स्थापना के 200 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। यह स्थापना, स्वयं भगवान श्री हरि द्वारा की गई थी।

वडताल मंदिर की 200वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, श्री स्वामीनारायण संप्रदाय में इस स्थान की महत्वपूर्ण भूमिका के सम्मानस्वरूप एक विशेष डाक–टिकट जारी किया जा रहा है। यह पहल, आध्यात्मिक विकास, सामुदायिक सेवा और सभी धर्मों के बीच सौहार्द की भावना को बढ़ावा देने में मंदिर की चिरस्थायी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह डाक–टिकट, पूजा अर्चना के पवित्र स्थल और प्रेरणा स्रोत वडताल की समृद्ध विरासत व असंख्य श्रद्धालुओं के जीवन पर इसके महत्वपूर्ण प्रभाव को प्रतिविंबित करता है।

डाक विभाग वडतालधाम द्विशताब्दी महोत्सव की 200वीं वर्षगांठ पूरे होने पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरवन्वित का अनुभव करता है और सभी धर्मों के बीच सौहार्द की भावना को बढ़ावा देने में मंदिर की चिरस्थायी प्रतिबद्धता को नमन करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री जयराज टी जी

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 305400
Stamps Printed	: 305400
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00